सामान्य भाषाविज्ञान: संक्षिप्त अध्ययन

आन लाइन अध्यापन / भ्रम निवारण समय

प्रातः 8-00 बजे से 9-30 भाषाशास्त्र एवं

सायं 5-30 बजे से 7-00 हिंदी साहित्य का इतिहास

ZOOM ID - 261-891-6758 / मोबाईल नं. 9473030984

संशोधन अपेक्षित है

इंटर से स्नातकोत्तर एवं हिंदी भाषा एवं साहित्य के - यूजीसी एवं सिविल सर्विसेज के अखिल भारतीय परीक्षार्थी / प्रतियोगी (सबके लिए उपलब्ध)

डा.शिवचन्द्र सिंह

प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष हिंदी

रामेश्वरदास पन्नालाल महिला महाविद्यालय, पटना सिटी

पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय, पटना

भाषा की परिभाषा

समुदाय विशेष के लिए भावाभिव्यक्ति में समर्थ मनुष्य के वाग्यंत्र से निःसृत यादृच्छिक सार्थक ध्वानिक संकेतों की पद्धति को भाषा कहते हैं

अर्थात्

- 1. भाषा यादृच्छिक (व्यक्ति के इच्छानुरूप) होती है
- 2. भाषा यादृच्छिक ध्वनियों से उत्पन्न शब्द एवं उनके भाव सार्थक होते हैं
- 3. भाषा भावाभिव्यक्ति (व्यक्ति के मानसिक-वाचिक भावों की अभिव्यक्ति) में समर्थ होती है
- 4. भाषा मनुष्य के वाग्यंत्र(उच्चारण अवयव-फेफडें से लेकर अधरोष्ठ एवं नासिकाग्र तक के अंग) निःसृत (निकलती) है
- 5. भाषा ध्वनियाँ ध्वानिक (अर्थात् स्पष्ट उच्चारण एवं श्रवण होना चाहिय) होती है
- 6. भाषा सांकेतिक (समुदाय विशेष ने संकेतों को मान्यता प्रदान की है) होती है
- 7. भाषा संकेत एक पद्धति में होते है, शब्द या पद में प्रयुक्त प्रत्येक ध्वनि का एक निश्चित क्रम होता है, क्रम भंग होने पर या प्रयुक्ति के स्थान परिवर्तन से अर्थ बदल जाता है जैसे- क ल म - कलम लेखन सामग्री, गुलाब की कलम, धान की कलम, सर कलम/ क म ल म के स्थान परिवर्तन से कमल- एक प्रकार का फूल हो गया

भाषा की इकाइयाँ/अंग

- ध्वनि-अक्षर, ध्वनि या वर्ण= वाक्यंत्रों से निःसृत एवं वर्ण=पठनीय सामग्री पर अंकित अथवा टंकित रूप
- पद- ध्वनियों के मेल से शब्द, शब्द + विभक्ति=पद
- वाक्य- भावाभिव्यक्ति के लिए प्रयुक्त होने के बाद शब्द पद बन जाता है, पद=पैर=चलने लायक, व्यवहार्य पद समूह में आकर वाक्य बनाते हैं,
- अर्थ-वाक्य का एक निश्चित भावात्मक अर्थ होता है

भाषाविज्ञान के अंग

ध्वनिविज्ञान

पदविज्ञान

वाक्यविज्ञान

अर्थविज्ञान

भाषाविज्ञान की शाखाएँ

- **ऐतिहासिक या कालक्रमिक भाषाविज्ञान**=
  ध्वनि, पद, वाक्य एवं अर्थ का ऐतिहासिक या कालक्रमिक विकास दर्शाना
- **तुलनात्मक या व्यतिरेकी भाषाविज्ञान**=
  ध्वनि, पद, वाक्य एवं अर्थ का तुलनात्मक अध्ययन करना
- **वर्णनात्मक या विवरणात्मक या विश्लेषणात्मक भाषाविज्ञान**=
  ध्वनि, पद, वाक्य एवं अर्थ का वर्णनात्मक या विवरणात्मक परिचय प्रदान करना

ऐतिहासिक या कालक्रमिक
भाषाविज्ञान की शाखाएँ

- ऐतिहासिक ध्वनिविज्ञान= ध्वनि का ऐतिहासिक या कालक्रमिक विकास दर्शाना
- ऐतिहासिक पदविज्ञान= पद का ऐतिहासिक या कालक्रमिक विकास दर्शाना
- ऐतिहासिक वाक्यविज्ञान= वाक्य का ऐतिहासिक या कालक्रमिक विकास दर्शाना
- ऐतिहासिक अर्थविज्ञान = अर्थ का ऐतिहासिक या कालक्रमिक विकास दर्शाना

तुलनात्मक या व्यतिरेकी
भाषाविज्ञान की शाखाएँ

- तुलनात्मक ध्वनिविज्ञान = ध्वनियों का तुलनात्मक अध्ययन करना
- तुलनात्मक पदविज्ञान = पदों का तुलनात्मक अध्ययन करना
- तुलनात्मक वाक्यविज्ञान= वाक्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना
- तुलनात्मक अर्थविज्ञान = अर्थ का तुलनात्मक अध्ययन करना

वर्णनात्मक या विवरणात्मक या विश्लेषणात्मक
भाषाविज्ञान की शाखाएँ

- वर्णनात्मक ध्वनिविज्ञान = ध्वनियों का वर्णनात्मक अध्ययन करना
- वर्णनात्मक पदविज्ञान = पदों का वर्णनात्मक अध्ययन करना
- वर्णनात्मक वाक्यविज्ञान= वाक्यों का वर्णनात्मक अध्ययन करना
- वर्णनात्मक अर्थविज्ञान = अर्थ का वर्णनात्मक अध्ययन करना

ध्वनियों का वर्गीकरण

- स्वर- मूल या सरल स्वर, दीर्घ स्वर, संयुक्त स्वर, अयोगवाह
- व्यंजन-
  - स्पर्श्य- क वर्ग के क से प वर्ग के म तक
  - नासिक्य - सभी पंचमाक्षर
  - अंतस्थ- य र ल व
  - ऊष्म व्यंजन- श, ष, स, ह
  - मिश्रित या संयुक्त व्यंजन - क्ष श्र, ज्ञ, त्र
  - अल्पप्राण= ह रहित ध्वनि
  - महाप्राण = हकार युक्त ध्वनि

पद के प्रकार

1.विकारी पद एवं 2. अविकारी पद

1. विकारी पद

- नाम पद- संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण
- क्रिया पद- कार्य निष्पादन
  - विकार लानेवाले तत्त्व= व्याकरणिक कोटियाँ
    लिंग, वचन, पुरुष, कारक, काल

2. अविकारी पद

- अव्यय पद- क्रिया-विशेषण, समुच्चयबोधक, विस्मयादिबोधक, संबंधबोधक
- पूर्वसर्ग(उपसर्ग)/परसर्ग(प्रत्यय)

वाक्य के तत्त्व

- आकांक्षा = वाचक में कुछ कहने की इच्छा होनी चाहिये
- आसत्ति = वाचक शब्द समीपस्थ होने चाहिये
- योग्यता = वाचक द्वारा प्रयुक्त पद समूहों में यथोचित अभिव्यक्ति होनी चाहिये

अर्थ परिवर्तन

- अर्थ विस्तार = पूर्व में किसी खास अर्थ को देनेवाले अर्थ का अनेक अर्थ देने में समर्थ हो जाना
- अर्थादेश = पूर्व में किसी खास अर्थ को देनेवाले अर्थ का अर्थ(अर्थोत्कर्ष=अच्छे अर्थ में प्रयुक्त होने लगना) एवं (अर्थापकर्ष=बुरे अर्थ में प्रयुक्त होने लगना) बदल जाना
- अर्थ संकोच = पूर्व में किसी खास अर्थ को देनेवाले अर्थ का अनेक अर्थ देने में समर्थ हो जाना